बी॰ए॰ भाग-3
हिन्दी प्रतिष्ठा
पेपर - 7
'ध्वनिविज्ञान'

रमेश कुमार यादव
हिन्दी विभाग डी॰के॰ कालेज
डुमरॉव बक्सर

ध्वनि विज्ञान की अवधारणा :-

भाषा का आरम्भ से होता है। ध्वनि के अभाव में भाषा की कल्पना नहीं की जा सकती है और जैसा हमने देखा है, भाषाविज्ञान का विषय ध्वन्यात्मक भाषा ही है। इसलिए सर्वप्रथम ध्वनि का विवेचन आवश्यक है।

ध्वनि के तीन पक्ष हैं - (1) उत्पादन (2) संवहन और (3) ग्रहण। इनमें उत्पादन और ग्रहण का सम्बन्ध शरीर से है और संवहन का वायु - तरंगों से। वक्ता के मुख से निः सृत ध्वनि श्रोता के कान तक पहुँचती है। ध्वनि के उत्पादन के लिए वक्ता जितना आवश्यक है, उतना ही उसके ग्रहण के लिए श्रोता आवश्यक है, किन्तु वक्ता और श्रोता के बीच यदि ध्वनि के संवहन का कोई माध्यम न हो तो उत्पन्न ध्वनि भी निरर्थक हो जायेगी। यह कार्य वायु - तरंगों के द्वारा सिद्ध होता है। ध्वनि का उत्पादन या ग्रहण कैसे होता है, इसे अच्छी तरह समझने के लिए शरीर का थोड़ा - बहुत ज्ञान आवश्यक है। ध्वनि का संवहन वाला पक्ष भी तब तक अच्छी तरह नहीं समझा जा सकता जब तक भौतिकी का थोड़ा - बहुत ज्ञान न हो।

बोलते तो सभी हैं, पर कैसे बोलते हैं, इसका उत्तर देना सबके लिए आसान नहीं है। ध्वनि कहाँ से, कैसे उत्पन्न होती है, यह शरीर विज्ञान से परिचित व्यक्ति ही अच्छी तरह समझ सकता है और शरीर विज्ञान से परिचित व्यक्ति भी तब तक इसे नहीं बता सकता जब तक उसने इस पर ध्वनि विज्ञान की दृष्टि से विचार न किया हो, कारण कि शरीर विज्ञान की दृष्टि ध्वनि विज्ञानी की दृष्टि से भिन्न होती है।

ध्वनिविज्ञान के प्रसंग में वागिन्द्रिय या भाषणेन्द्रिय शब्द का प्रयोग किया जाता है, जिसका अर्थ हुआ कि वाक् अथवा भाषण की कुछ खास इन्द्रियाँ हैं। किन्तु हमारे शरीर में वागिन्द्रिय या भाषणेन्द्रिय नाम की कोई वस्तु नहीं है, यदि है भी तो केवल कान, क्योंकि उसका उपयोग भाषा के ग्रहण के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। भाषण या बोलने का काम उन अंगों का इन्द्रियों से लिया जाता है जिनका प्रधान उपयोग जीवन-धारण के लिए होता है। जैसे, मुँह खाने के लिए है; नाक श्वास लेने के लिए, आगे के दाँत भोजन को काटने और बगल के पीसने के लिए। जीभ भोजन

की ग्राह्यता और अग्राह्यता का निर्णय करती है। होंठ फाटक का काम करते हैं, अन्यथा सोते समय द्वार खुला पाकर कोई भी कीड़ा - मकोड़ा मुँह में घुस सकता है। प्रकृति ने इसका ध्यान रखा है कि सोते समय भी मनुष्य निरापद रूप में सो सके। इसीलिए मुँह पर होंठों का फाटक लगा दिया है जो सोने पर आप-से आप बन्द हो जाते हैं और आँखों पर पलकों का आवरण डाल दिया है जो नींद आने पर आँखों को ढ़क लेती है। कहने का तात्पर्य यह कि जिन इन्द्रियों से हम बोलने का काम लेते हैं, उनमें कोई भी केवल बोलने के लिए नहीं बनी। इसलिए वागिन्द्रिय शब्द को गौण अर्थ में ही प्रयुक्त मानना चाहिए। इसको ऐसे कहे कि हमारे शरीर में अनेक इन्द्रियाँ है जिनसे हम दुहरे काम लेते हैं-एक ओर, उनसे जीवन-त्राण होता है और दूसरी ओर ध्वनि की उत्पत्ति भी, जिसमें भाषिक व्यवस्था सम्भव होती है।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट- प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, डी.के. कालेज
डुमरॉव बक्सर